INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF HUMANITIES AND INTERDISCIPLINARY STUDIES
(Peer-reviewed, Refereed, Indexed & Open Access Journal)
DOI : 03.2021-11278686 ISSN : 2582-8568 IMPACT FACTOR : 8.031 (SJIF 2025)

जवाहर लाल नेहरू की कृषि - नीति

(Agricultural Policy of Jawahar Lal Nehru)

अनुपमा सिंह

शोधार्थी,
इतिहास विभाग,
राजा हरपाल सिंह स्नातकोत्तर
महाविद्यालय, सिंगरामऊ, जौनपुर
वीर बहादुर सिंह पूर्वांचलविश्वविद्यालय,
जौनपुर (उत्तर प्रदेश, भारत)

डॉ. मनोज कुमार सिंह

शोध निर्देशक, असिस्टेंट प्रोफ़ेसर,
इतिहास विभाग,
राजा हरपाल सिंह स्नातकोत्तर
महाविद्यालय, सिंगरामऊ, जौनपुर
वीर बहादुर सिंह पूर्वांचलविश्वविद्यालय,
जौनपुर (उत्तर प्रदेश, भारत)

DOI No. 03.2021-11278686 **DOI Link ::** https://doi-ds.org/doilink/07.2025-99746113/IRJHIS2507006

प्रस्तावना :

भारत के पहले प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू के पास देश के कृषि विकास के लिए एक दृष्टिकोण था जो औद्योगीकरण और सामाजिक समानता के उनके व्यापक लक्ष्यों के साथ गहराई से जुड़ा हुआ था। उनकी कृषि-नीतियों का मुख्य उद्देश्य कृषि को आधुनिक बनाना, उत्पादकता बढ़ाना और ग्रामीण कृषकों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति में सुधार करना था।

नेहरू कृषि क्षेत्र को बहुत महत्वपूर्णमानते थे। उन्होंने ग्रामीण विकास प्राथमिकता प्रदान की क्योंकि उनका मानना था कि बिना ग्रामीणों का विकास हुए देश का विकास नहीं हो सकता और कृषि विकास ही एक मात्र ऐसा माध्यम है जिससे ग्रामीणों का विकास सम्भव है। नेहरू के कार्य-काल में कृषि को उन्नत करने और कृषि उत्पादकता को बढ़ाने के उद्देश्य से विभिन्न कृषिगत योजनाएँ एवं नीतियाँ बनायी गयीं जिनमें जल, बिजली, नलीकरण, सड़क, स्वास्थ्य और शिक्षा को शामिल किया गया।

कृषि नीति के सफलतापूर्वक क्रियान्वयन के लिए कृषि क्षेत्र में उन्नत तकनीकी पर विशेष ध्यान दिया गया। कृषि अनुसंधानों और उन्नततकनीकों के माध्यम से किसानों को नवीन और उन्नत तकनीकों का ज्ञान दिया गया।

किसानों को उनकी फसल के उचित मूल्य के लिए कृषि बाजार को सुधारने प्रयास किया गया और **भारतीय कृषि बाजार बोर्ड** की स्थापना हुई। इसका उद्देश्य किसानों को न्याय संगत तरीक़े से मिलने वाले मूल्य के लिए अधिक संगठित बाजार प्रदान करना था।

कृषि क्षेत्र में उत्तरोत्तर विकास को सुनिश्चत करने के लिए कृषि शिक्षा को आवश्यक माना गया और कृषि शिक्षा संस्थाएँ स्थापित की गयीं।नेहरू के शासन काल में भारतीय किसानों को नवीनतम खेती की तकनीकों और विज्ञान के प्रशिक्षण के लिए कृषि विश्वविद्यालयों की स्थापना की गयी।

नेहरू की कृषि नीति कृषि क्षेत्र को मजबूत बनाने और भारतीय अर्थव्यवस्था को नई ऊँचाई तक ले जाने के लिए की गयी

एक नयी पहल थी। पंडित नेहरू की कृषि नीति के प्रमुख पहलू इस प्रकार हैं:

1.भूमि सुधार और कृषि संसाधनों का प्रबंधन :

नेहरुजी ने अपने कार्य-काल में अनेक योजनाओं एवं क़ानूनों के माध्यम से भूमि सुधार की प्रक्रिया एवं कृषि संसाधनों के प्रबंधन को अधिक प्रभावी बनाने का प्रयास किया। इस नीति के अंतर्गत भूमि असमानता के मुद्दे के समाधान के लिए नेहरू ने भूमि सुधार की वकालत की। उनकी सरकार ने भूमि सीमा कानून, किरायेदारी सुधार और भूमिहीन किसानों को भूमि का पुनर्वितरण जैसे विभिन्न उपाय लागू किए। इन प्रयासों का उद्देश्य भूमि का अधिक न्यायसंगत वितरण करना और छोटे और सीमांत किसानों की स्थिति में सुधार करना था।

कृषि संसाधनों का अधिक से अधिक दोहन हो सके इसके लिए आधुनिक एवं नवीनतम तकनीकों को बढ़ावा दिया गया। किसान इन तकनीकों को आसानी से सीख कर अपना सकें इसके लिए उनको शिक्षित करने का भी प्रयास किया गया।

2. जल संसाधन प्रबंधन और योजनाएँ:

नेहरू के दृष्टिकोण में जल संसाधन का प्रबंधन होना अत्यंत आवश्यक था। उनके कार्यकाल में कृषि नीति के अंतर्गत जल संसाधन के प्रबंधन पर भी विशेष ध्यान दिया गया। इस दिशा में विभिन्न योजनाओं जैसे तालाब निर्माण, सिंचाई योजनायें आदि की शुरुआत की गयी। अनेक माध्यमों से जल संचयन और सिंचाई की योजनाओं को प्रोत्साहित किया गया जिससे कृषि में जल संसाधन को अधिक से अधिक उपयोगी बनाया जा सके।

3. कृषकों के साथ सम्बंधों का सुधार:

भारतीय कृषि और किसान हमेशा से एक दूसरे के पूरक रहे हैं। नेहरु जी की सोच में किसानों की उन्नति से ही ग्रामीण विकास का मार्ग प्रशस्त किया जा सकता था। उनका मानना था कि किसानों की स्थिति को ज़मीनी स्तर पर समझ कर उनकी समस्याओं को दूर करने का प्रयास किया जाना चाहिए। उन्होंने हमेशा किसानों के शासन के साथ सम्बंधों को बेहतर बनाने की कोशिश की। परिणाम स्वरूप गाँवों के विकास को गति प्रदान करने के लिए विभिन्न योजनायें शुरू की गयीं जिनके अंतर्गत ग्रामीण विकास योजना, किसान विकास कार्यक्रम, जल संसाधन योजना और स्वास्थ्य योजना आदि की शुरुआत की गयी। इस प्रकार इन योजनाओं के माध्यम से किसानों के जीवन में सुधार लाने का प्रयास किया गया।

4. कृषि विविधता को बढ़ावा :

कृषि को विकास परक एवं आत्म निर्भर बनाने के लिए कृषि विविधीकरण को आवश्यक माना गया। कृषि विविधीकरण को बढ़ावा देने के लिए कृषिगत योजनायें और कार्यक्रम शुरू किये गये। कृषि अनुसंधानों और उत्पादन को प्रोत्साहित किया गया जिससे कृषि की उत्पादकता में सुधार हो सके।

5. खाद्य सुरक्षा कार्यक्रम :

पंडित जवाहर लाल नेहरू ने राज्य-नेतृत्व वाले औद्योगीकरण, कृषि सुधारों और सामाजिक नीतियों के मिश्रण के माध्यम से खाद्य सुरक्षा पर ध्यान केंद्रित किया । उनकी प्राथमिकता आर्थिक विकास और सामाजिक कल्याण सुनिश्चित करते हुए खाद्य उत्पादन में आत्मनिर्भरता प्राप्त करने की थी ।

संक्षेप में नेहरू की खाद्य सुरक्षा नीति के मुख्य पहलू निम्नवत थे:

i) राज्य-नेतृत्व वाला कृषि विकास: कृषि में वैज्ञानिक और तकनीकी प्रगति पर जोर दिया गया जिसके अंतर्गत हरित क्रांति जैसी नीतियों के लिए आधार तैयार हुआ ।

ii) पंचवर्षीय योजनाएँ और कृषि पर ध्यान:

- पहली पंचवर्षीय योजना (1951-56) में कृषि और सिंचाई को प्राथमिकता दी गई जिसमें बजट का 31% इस क्षेत्र को आवंटित किया गया ।
- दूसरी पंचवर्षीय योजना(1956-61) में औद्योगिकीकरण पर ध्यान केंद्रित किया गया लेकिन फिर भी आर्थिक स्थिरता के लिए कृषि को आधार बनाया गया ।

देश में पंचवर्षीय योजना में भारतीय अर्थव्यवस्था का स्वरूप मिश्रित अर्थव्यवस्था (Mixed Economy) के रूप में रखा गया जिसमें सार्वजनिक एवं निजी क्षेत्र के सह-अस्तित्व की बात कही गयी।

iii) सिंचाई और बुनियादी ढाँचा विकास:

- सिंचाई में सुधार और सूखे के प्रभावों को कम करने के लिए भाखड़ा नांगल हीराकुड और दामोदर घाटी परियोजनाओं का निर्माण किया गया।
- सड़कों और भंडारण सुविधाओंसहित ग्रामीण बुनियादी ढाँचे का विस्तार किया गया।

iv) वैज्ञानिक अनुसंधान एवं शिक्षा

- वैज्ञानिक खेती को बढ़ावा देने के लिए भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद(ICAR) और कृषि विश्वविद्यालयों जैसे संस्थानों की स्थापना की गयी।
- उच्च उपज वाली फसल किस्मों में अनुसंधान कासमर्थन किया जिससे बाद में कृषि उन्नति की नींव रखी गई।

6. सामुदायिक विकास कार्यक्रम :

सन् 1952 में तत्कालीन प्रधानमंत्री पंडित नेहरू ने सामुदायिक विकास कार्यक्रम (Community Development Programme- CDP) की शुरुआत की जिसका उद्देश्य कृषि, स्वास्थ्य, शिक्षा और बुनियादी ढाँचे के विकास के साथ-साथ विभिन्न विकासात्मक गतिविधियों में सामुदायिक भागीदारी के माध्यम से ग्रामीण क्षेत्रों में बदलाव लाना था। कार्यक्रम में कृषि उत्पादकता बढ़ाने, ग्रामीण उद्योगों को बढ़ावा देने और ग्रामीण क्षेत्रों में जीवन की समग्र गुणवत्ता में सुधार लाने पर ध्यान केंद्रित किया गया।

भारत में स्वतंत्रता से बहुत पहले ही भारतीय नेताओं के विचार में सामुदायिक विकास की अवधारणा आ गयी थी। महात्मा गाँधी के नेतृत्व में स्वतंत्रता संग्राम के दौरान भी गाँवों के उत्थान पर बहुत ध्यान दिया गया था। गाँधीजी का मानना था कि सच्ची स्वतंत्रता ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मज़बूत करने और गरीबी उन्मूलन से ही प्राप्त की जा सकती है। 1935 में भारत की ब्रिटिश सरकार ने एक अधिनियम बनाया जिसमें ग्रामीण विकास को एक महत्वपूर्ण कार्यक्रम के रूप में शामिल किया गया।

स्वतंत्रता प्राप्ति के उपरान्त भारत के नीति नियंताओं ने यह महसूसकिया कि भारत तब तक प्रगति नहीं कर सकता जब तक कि उसके गाँवों का विकास नहीं होता। ग्रामीण आबादी का एक बड़ा हिस्सा गरीबी रेखा से नीचे जीवन यापन करता है जिनमें बड़े पैमाने पर छोटे, बड़े और सीमांत किसान, खेतिहर मजदूर, कारीगर, विभिन्न जातियाँ और जनजातियाँ शामिल हैं। स्वतंत्रता के उपरान्त गाँवों को विकसित करने और गाँवों में लोगों के जीवन स्तर को बेहतर बनाने के लिए तमाम योजनाएँ बनाई गईं सामुदायिक विकास कार्यक्रम जैसे कुछ कार्यक्रमों का उल्लेख प्रमुख रूप से किया जा सकता है। इन कार्यक्रमों का मुख्य उद्देश्य ग्रामीण आबादी का उत्थान तथा कृषि, पशुपालन, सड़क, स्वास्थ्य, शिक्षा, आवास, रोजगार, सामाजिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियोंजैसे क्षेत्रों का विकास करना था।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद सामुदायिक विकास कार्यक्रम को उच्च प्राथमिकता दी गई। 1952 में भारत सरकार ने 55 जिलों में पायलट आधार पर आधिकारिक तौर पर सामुदायिक विकास कार्यक्रम शुरू किया, जिसमें प्रत्येक में कम से कम 300 गाँव या लगभग 30,000 की आबादी शामिल थी। यह कार्यक्रम बहुआयामी था लेकिन इसका मुख्य उद्देश्य ग्रामीण लोगों का सामाजिक-आर्थिक उत्थान या परिवर्तन था। कार्यक्रम के मूल उद्देश्य इस प्रकार थे:

- देश के कृषि उत्पादन में पर्याप्त वृद्धि, संचार प्रणाली, ग्रामीण स्वास्थ्य एवं स्वच्छता तथा ग्रामीण शिक्षा में सुधार के लिए प्रावधान करना।
- एकीकृत सांस्कृतिक परिवर्तन की प्रक्रिया आरंभ करना और उसका निर्देशन करना जिसका उद्देश्य ग्रामीणों के सामाजिक और आर्थिक जीवन में परिवर्तन लाना।

प्रधानमंत्री पंडित नेहरू के शब्दों में, "ये परियोजनायें न केवल भौतिक उपलब्धियों के लिए बल्कि समुदाय और व्यक्ति के निर्माण के लिए भी अत्यंत महत्वपूर्ण प्रतीत होती हैं तथा व्यक्ति को अपने ग्राम केन्द्र और व्यापक अर्थों में भारत का निर्माता बनाती

हैं।"

सामुदायिक विकास से तात्पर्य ऐसी सतत सामाजिक प्रक्रिया से है जो ग्रामीण समुदायों के पारंपरिक जीवन-शैली से प्रगतिशील जीवन-शैली में परिवर्तन को दर्शाता है। इस प्रक्रिया द्वारा ग्रामीण लोगों को उनकी अपनी क्षमता और संसाधनों के आधार पर स्वयं का विकास करने में सहायता की जा सकती है। सामुदायिक विकास को ग्रामीण लोगों के कल्याण से संबंधित एक कार्यक्रम के रूप में तथा एक निश्चित वैचारिक विषय-वस्तु के साथ एक आंदोलन के रूप में भी देखा जा सकता है।

योजना आयोग ने सामुदायिक विकास कार्यक्रम को इन शब्दों में परिभाषित किया है: "सामुदायिक विकास लोगों के स्वयं के प्रयासों के माध्यम से ग्राम जीवन में सामाजिक और आर्थिक परिवर्तन लाने का एक प्रयास है।"

सामुदायिक विकास कार्यक्रम के लक्ष्य/ उद्देश्य :

इस कार्यक्रम में लोगों द्वारा आत्मनिर्भरता तथा आत्म सहायता और उत्तरदायित्व पर मुख्य रूप से ज़ोर दिया जाना था। यह मूलतः जनता के कल्याण के लिए जनता के एक आंदोलन के रूप में संगठित किया जाने वाला कार्यक्रम था। इस कार्यक्रम के शुभारंभ के अवसर पर नेहरू ने 1952 ई० में कहा था कि इसका मूल लक्ष्य –"जनता के बीच नीचे से शक्ति संचार करने" का है। परंतु इसका मूल उद्देश्य "समुदाय और व्यक्ति को अपन गाँव और व्यापक अर्थों में भारत का निर्माता बना देना था।" इसका दूसरा महत्वपूर्ण उद्देश्य "समाज के निम्नतम तबके को ऊपर उठाना" था। नेहरू ने बार -बार समुदायिक विकास कार्यक्रम और उसके साथ जुड़ी राष्ट्रीय विस्तार सेवा की चर्चा "नई सरकार" और "एक महान क्रांति" तथा "भारत की पुनरुत्थानशील भावना का प्रतीक" के रूप में किया।

प्रो. एस. सी. दुबे ने 1952 में सामुदायिक विकास कार्यक्रम की शुरुआत के समय ग्रामीण परिप्रेक्ष्य में सामुदायिक विकास के निम्न आधारभूत लक्ष्य या उद्देश्य रेखांकित किए थे:

- कृषि उत्पादन को मात्रात्मक और गुणात्मक दोनों रूप से बढ़ाना।
- ग्रामीण बेरोजगारी की समस्या का समाधान करना।
- पुरानी सड़कों की मरम्मत और नई पक्की सड़कों के निर्माण के माध्यम से गांवों के भीतर परिवहन और संचार के साधनों का विकास करना।
- प्राथमिक शिक्षा, सामुदायिक स्वास्थ्य और मनोरंजन के क्षेत्र में सुधार लाना।
- नवीन योजनाओं और आधुनिक निर्माणविधियों की मदद से अच्छे और सस्ते आवास बनाने में ग्रामीणों की सहायता करना।
- कुटीर उद्योगों और स्वदेशी हस्तशिल्पों की स्थापना और प्रोत्साहन करना।
- निकटवर्ती क्षेत्र में ग्रामीण उद्योगों का निर्माण करना जिससे ग्रामीणों को रोज़गार के अवसर प्राप्त हो सकें एवं उनकी आवश्यकताओं पूर्ति हो सके।
- विभिन्न वर्गों में सामाजिक-आर्थिक समानता लाना।
- पारिस्थितिकी पर्यावरण में सुधार कर इसे विकास और खुशहाली के लिए अनुकूल बनाना।

इन उद्देश्यों की पूर्ति के लिए भारत सरकार ने 1952 में प्रथम पंचवर्षीय योजना (1952-57) के साथ-साथ भारत के 55 जिलों में सामुदायिक परियोजनाओं का शुभारंभ किया। प्रथम पंचवर्षीय योजना में प्रत्येक तीन गाँवों में से एक को सामुदायिक विकास कार्यक्रम के अंतर्गत लाया गया।

पहली पंचवर्षीय योजना का मुख्य उद्देश्य ग्रामीण लोगों के सामाजिक और आर्थिक जीवन में परिवर्तन की प्रक्रिया का आरम्भ करना था। जबकि दूसरी पंचवर्षीय योजना (1957-1962) की शुरुआत से भारत के हर गाँव को सामुदायिक विकास परियोजनाओं के दायरे में लाने का लक्ष्य रखा गया जिसमें लगभग 40 प्रतिशत क्षेत्र को सामुदायिक विकास परियोजनाओं के लिए गहन विकास क्षेत्र के अंतर्गत लाया गया।

सामुदायिक विकास कार्यक्रम का क्रियान्वयन और निष्कर्ष :

सामुदायिक विकास कार्यक्रम सीमित स्तर पर 1952 ई० में शुरू किया गया। इसमें 55 विकास प्रखंड चुने गए। प्रत्येक प्रखंड में 100 गाँव और क़रीब 60-70 हज़ार की आबादी थी। 1960 के दशक के मध्य में आकर देश का अधिकाधिक भाग सामुदायिक प्रखंडों के जाल में ढक गया जिसमें 6000 प्रखंड विकास अधिकारी और क़रीब 600 हज़ार ग्राम सेवक नियुक्त किए गए, जो इस कार्यक्रम को लागू कर सकें। इस कार्यक्रम में ग्रामीण जीवन के प्रत्येक पक्ष को लिया गया था। खेती बेहतर बनाने की विधियों से लेकर संचार, स्वास्थ्य और शिक्षा के सुधार आदि सभी पहलुओं को लिया गया था।

1956 में पहली पंचवर्षीय योजना अवधि के अंत तक लगभग 1,114 ब्लॉक थे, जिनमें 1,63,000 गाँव शामिल थे जो कुल जनसंख्या का लगभग 2/5 हिस्सा था। दूसरी पंचवर्षीय योजनाके अंत तक इसमें लगभग 3,000 ब्लॉक शामिल थे जिसमें लगभग 70% ग्रामीण क्षेत्र शामिल थे और 1964 तक इसमें पूरा देश शामिल हो गया।

1958 में ही इस कार्यक्रम के महत्व को समझते हुए पंचायतों को सामुदायिक विकास मंत्रालय को सौंप दिया गया। स्थानीय स्तर पर कार्यों को निष्पादित करने के लिए पंचायती राज की स्थापना हुई।

सामुदायिक विकास कार्यक्रम की संरचना:

बहुआयामी सामुदायिक विकास कार्यक्रम को क्रियान्वित करने के लिए, 2 अक्टूबर 1953 को एक राष्ट्रीय विस्तार सेवा का उद्घाटन किया गया जिसका उद्देश्य सामुदायिक विकास परियोजना के समुचित क्रियान्वयन के लिए आवश्यक जनशक्ति उपलब्ध कराना था।

प्रशासनिक उद्देश्यों के लिए पंचायतों को 60,000 से 70,000 लोगों को कवर करने वाले ब्लॉकों में बाँटा गया था। बाद में 15 से 20 ब्लॉकों से एक जिला बनता था। प्रत्येक पंचायत को एक ग्राम स्तरीय कार्यकर्ता दिया गया था जिसे ग्रामीणों और पंचायत के बीच बहुउद्देश्यीय उत्प्रेरक और विस्तार एजेंट के रूप में कार्य करना था।

गाँव के स्तर पर पंचायतों को विभिन्न संस्थाओं की स्थापना के प्रेरितकिया गया ताकि लोगों को उनके क्षेत्र में विकास कार्यों में शामिल किया जा सके। परियोजनाओं में महिलाओं की भागीदारी कोप्रोत्साहित करने के लिए महिला मंडलों की स्थापना की गई। आर्थिक और वाणिज्यिक कार्यों के लिए एक सहकारी समिति की स्थापना की गई। ग्रामीण कार्यक्रमों की शुरूआत इस विचार के साथ की गई कि लोगों को स्वयं सहायता के आधार पर भागीदारी के लिए प्रेरित किया जाए जिससे उनकी उन्नति के साथ-साथ राष्ट्र की उन्नति भी सुनिश्चित हो।

बलवंत राय समिति ने सामुदायिक विकास परियोजनाओं को एक संगठन केरूप में उचित संरचना प्रदान की। इसके लिए **त्रिस्तरीय प्रणाली** के रूप में एक ढाँचा स्थापित किया गया जिसके अंतर्गत जिला स्तर पर जिला परिषद, ब्लॉक स्तर पर पंचायत समिति और गाँव स्तर पर ग्राम पंचायत शामिल थे।

सामुदायिक विकास कार्यक्रम के क्षेत्र :

सामुदायिक विकास परियोजनाओं के लिए उनक्षेत्रों को शामिल किया गया जिनसे ग्रामीण समुदाय के समग्र विकास में मदद मिल सके। इन परियोजनाओं के मुख्य घटकनिम्नवत हैं :

a) कृषि :

कृषि और संबद्ध क्षेत्रों में विकास के लिए विभिन्न कार्यक्रम नियत किए गए जिनमें शामिल हैं:

i. उपलब्ध बंजर भूमि का सुधार
ii. वाणिज्यिक उर्वरकों और उन्नत गुणवत्ता वाले बीजों की उपलब्धता
iii. फलों और सब्जियों की खेती को बढ़ावा देना
iv. कृषि तकनीकों की बेहतर गुणवत्ता और उचित भूमि उपयोग
v. तकनीकी जानकारी की आपूर्ति
vi. उन्नत कृषि उपकरण

vii. बेहतर विपणन और ऋण सुविधाएं

viii. जिला स्तर पर मृदा सर्वेक्षण का प्रावधान और मृदा क्षरण की रोकथाम

ix. प्राकृतिक और कम्पोस्ट खाद के उपयोग को प्रोत्साहन

x. पशुधन में सुधार जिसमें प्रजनन पशुओं के लिए पशु चिकित्सा सहायता के साथसाथ कृत्रिम गर्भाधान केंद्रों की स्थापना जिससे ताकि दुग्ध उत्पादन में वृद्धि हो सके।

b) सिंचाई :

स्वतंत्रता के उपरांत भारत के सम्मुख तीनप्रमुख समस्याएँ थीं : शरणार्थियों का पुनर्वास, अन्न की अत्यधिक कमी तथा अर्थव्यवस्था पर मुद्रा स्फीति का दबाव। इसलिए प्रथम पंचवर्षीय योजना ने कृषि जिसमें सिंचाई तथा ऊर्जा भी सम्मिलित थी, पर सबसे अधिक बल दिया। राजकीय क्षेत्र के 2069 करोड़ रूपये (जिसे बाद में 2378 करोड़ कर दिया गया था) का लगभग 44.6 प्रतिशत इस क्षेत्र के विकास के लिए निश्चित किया गया। पंजाब में रोपड़ से लगभग 50 मील दूर सतलज नदी पर भाखड़ा -नांगल बाँध का काम ,जो कुछ समय से बहुत धीमी गति से हो रहा था,अब और तेज कर दिया गया। इसी प्रकार दामोदर घाटी योजना तथा हीराकुड बाँध का कार्य भी आरम्भ किया गया।

c) शिक्षा :

पुरुषों और महिलाओं के लिए समान रूपसे उचित शिक्षा सुविधाओं मेंसुधार के बिना पूर्ण सामुदायिकविकास सुनिश्चित नहीं किया जा सकता है।इसलिए सामुदायिक परियोजनाओं के अंतर्गत प्राथमिकऔर माध्यमिक शिक्षा के विस्तार और सुधार तथा इसे धीरे-धीरे बुनियादी प्रकार में परिवर्तित करने, कामकाजी बच्चों के लिए शैक्षिक सुविधाओं का प्रावधान और युवा कल्याण को बढ़ावा देने की व्यवस्था की गयी। शैक्षिक कार्यक्रम के सभी चरणों में व्यावसायिक और तकनीकी प्रशिक्षण पर भी जोर दिया गया।

d) संचार :

सामुदायिक विकास के लिए ग्रामीण क्षेत्रों में सड़कों के विकास का प्रावधान किया गया ताकि परियोजना इकाई क्षेत्र के सभी गाँवों के साथ गाँव से अधिकतम आधे मील की दूरी तक उचित संपर्क सुनिश्चितकिया जा सके।

e) रोजगार :

नेहरू विचार था कि हमें लघु उद्योगों का निर्माण क्रमबद्ध पैमाने पर करना चाहिए, क्योंकि यह आर्थिक और राजनीतिक दृष्टि से भी आवश्यक है। जो देश उद्योगों को पूर्ण रूप से त्याग देते हैं, उन्हें कुछ न कुछ परेशानी अवश्य उठानी पड़ती है। हमें औद्योगीकरण के समय लघु उद्योगों को ध्यान में रखना चाहिए तथा वृहद पैमाने पर भारत में उनका विकास करना चाहिए और इन उद्योगों को स्वतंत्रता भी प्रदान करनी चाहिए। मैं यह नहीं कह सकता कि इस विज्ञान के युग में आने वाली भावी पीढ़ी लघु उद्योगों को देख भी पाएगी या नहीं। इसलिए हमें इनका विकास करना चाहिए।

कुटीर एवं लघु उद्योगों के विकास, ईंट भट्टों एवं आरा मिलों के निर्माण के माध्यम से ग्रामीण समुदाय में बेरोजगार एवं अल्प-रोजगार वाले व्यक्तियों को यथासंभव लाभकारी रोजगार उपलब्ध कराया जाना इस कार्यक्रम की प्राथमिकता रही। इस कार्यक्रम के आधारभूत लक्ष्यों में सामुदायिक विकास परियोजना से जुड़े ग्रामीणों के लिए परियोजना क्षेत्र में ही रोजगार के अवसर उपलब्ध कराना तथा परियोजना में उनकी समुचित भागीदारी सुनिश्चित करना शामिल था।

f) स्वास्थ्य :

ग्रामीणों को समुचित स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध कराने के लिए स्वास्थ्य संगठन की स्थापना की गई जिसके तहत विकास खंडों में प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों तथा परियोजना क्षेत्र के मुख्यालय में अस्पताल और मोबाइल डिस्पेंसरी से सुसज्जित एक माध्यमिक स्वास्थ्य इकाईयों की स्थापना की गई।

g) प्रशिक्षण :

किसानों, ग्राम स्तरीय कार्यकर्ताओं, परियोजना पर्यवेक्षकों और अन्य कार्मिकों को उचित प्रशिक्षण देने के लिए प्रशिक्षण केन्द्रों की स्थापना की गई ताकि परियोजना कार्यों की कुशलता में सुधार किया जा सके एवं परियोजना की सफलता सुनिश्चित की

जा सके।

h) आवास :

सामुदायिक परियोजनाओं के अंतर्गत योजनाकर्मियों के साथ-साथ ग्रामीण आबादी के लिए आवास के प्रावधान किए गए।अधिक सघन आबादी वाले गाँवों में नए स्थलों के विकास, गाँव में पार्क एवं खेल के मैदान निर्मित करने की व्यवस्था की गयी।

i) सामाजिक कल्याण :

स्वतंत्रता के बाद भारतीय राष्ट्र का एकीकरण और स्थिरता ही प्रमुख समस्या न थी, अपितु इसे कल्याणकारी राज्य का स्वरूप देना भी महत्वपूर्ण कार्य था । संविधान के नीति निर्देशक तात्वों के तहत अनु०36 में कहा गया कि – "राज्य जनता के कल्याण को बढ़ावा देने के लिए एक ऐसी सामजिक व्यवस्था को यथासंभव प्रभावशाली उपायों से हासिल और सुरक्षित रखने की कोशिश करेगा जिसमें आर्थिक और राजनीतिक न्याय राष्ट्रीय जीवन को प्रत्येक संस्था के माध्यम से उपलब्ध होगा । इस आदर्श को दूसरी और तीसरी पंचवर्षीय योजना का अंग बनालिया गया ।

सामुदायिक विकास कार्यक्रम का मूल्यांकन:

सामुदायिक विकास कार्यक्रम को विस्तार कार्यों में अच्छी सफलता प्राप्त हुई । जैसे -बेहतर बीज, खाद आदि होने के परिणामस्वरूप आमतौर पर खेती का विकास तेज हुआ। इसके अलावा सड़क, तालाब, कुआँ, स्कूल तथा प्राथमिक चिकित्सा केंद्र आदि का निर्माण तथा शिक्षा एवं चिकित्सा सेवाओं का विस्ताहुआ ।

विभिन्न अध्ययनों से यह तथ्य सामने आया कि ग्रामीण लोगों के योगदान के बावजूद यह कार्यक्रम सामुदायिक परियोजनाओं में लोगों की पूर्ण भागीदारी सुनिश्चित करने में असफल रहा। लोगों ने इसे प्रक्रिया-उन्मुख कार्यक्रम के विपरीत कार्य-उन्मुख कार्यक्रम के रूप में देखा। यद्यपि लोग अपने श्रम के योगदान से इसमें शामिल थे लेकिन वे कभी भी वास्तविक भागीदार नहीं थे। हालाँकि यह कार्यक्रम अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने में पूर्णतया सफल नहीं हो पाया किंतु इस कार्यक्रम के माध्यम से ग्रामीण विकास की अवधारणा को बल मिला और भविष्य के लिए आधारभूत ढाँचा निर्मित करने में सफलता प्राप्त हुई।

7. हरित क्रांति :

नेहरू के ही जीवनकाल में तीसरी योजना में नई कृषि रणनीति लागू की गई । इसके अंतर्गत प्रत्येक राज्य में एक ज़िले के हिसाब से 15 ऐसे ज़िले चुने गए, जो एक नए कृषि कार्यक्रम के लिए प्राकृतिक दृष्टि से अनुकूल थे । यह कार्यक्रम था: गहन कृषि ज़िला कार्यक्रम (आई०ए०डी०पी०) । यह कार्यक्रम 1960 ई० में देश के कुछ राज्यों के गिने -चुने ज़िलों में लागू किया गया था। इसके अंतर्गत प्रत्येक ज़िले में खाद, कीटनाशक, दवाइयों, अच्छे बीजों तथा तकनीकी सहयता पर अधिक बल दिया गया । प्रत्येक राज्य में तय किया गया कि सम्बद्ध ज़िले में इन सुविधाओं के साथ -साथ सिंचाई की उचित व्यवस्था की जाए । इस कार्यक्रम का सबसे अधिक लाभ अमीर किसानों ने उठाया, क्योंकि अधिक उत्पादन का विश्वास देकर उन्होंने सस्ते दामों पर इन सुविधाओं को प्राप्त किया । 1960 ई० का दशक का मध्य आते-आते कई महत्वपूर्ण वैज्ञानिक खोजें हुईं । इनके मेल से एक ऐसी परिस्थिति पैदा हुई जिसने हरित क्रांति को सम्भव बनाया ।

यद्यपि हरित क्रांति ने नेहरू के कार्यकाल के बाद गति पकड़ी लेकिन उनकी सरकार ने इसकी सफलता के लिए कुछ मूलभूत कदम उठाए। नेहरू की सरकार ने कृषि अनुसंधान और विकास, कृषि विश्वविद्यालयों की स्थापना और आधुनिक कृषि तकनीकों को अपनाने का समर्थन किया और इस दिशा में कदम उठाए । इन प्रयासों ने बाद की हरित क्रांति की नींव रखी जिससे बाद में चलकर उच्च उपज देने वाली किस्मों के बीज, उर्वरक और सिंचाई तकनीकों के माध्यम से कृषि उत्पादकता में उल्लेखनीय वृद्धि हासिल हुई।

8. सार्वजनिक क्षेत्र में निवेश :

नेहरू कृषि में सार्वजनिक क्षेत्र के निवेश के महत्व में विश्वास करते थे। उनकी सरकार ने किसानों को आर्थिक समर्थन देने और कृषि उत्पादकता बढ़ाने के लिए सिंचाई परियोजनाओं, ग्रामीण बुनियादी ढाँचे, कृषि अनुसंधान संस्थानों और इनपुट सब्सिडी में निवेश किया।

1956 ई० औद्योगिक नीति :

वर्तमान औद्योगिक नीति मोटे रूप से 1956 ई० की औद्योगिक नीति की देन है। 1956 ई० की औद्योगिक नीति को इस रूप में सोचा गया तथा कि इससे दूसरीयोजना के उद्देश्यों की ओर बढ़ने में मदद मिले। जैसे कि आर्थिक विकास की गति को तेज करना और औद्योगीकरण की प्रक्रिया में तेज़ी लाना, सार्वजनिक क्षेत्र का विस्तार करना, सहकारी क्षेत्र का विकास, मशीन बनाने वाले सार्वजनिक क्षेत्र का विस्तार, सरकारी क्षेत्रा का विकास, मशीन बनाने वाली भारी उद्योगों की स्थापना तथा विकास, आय और सम्पत्ति के वितरण की असमानताओं को कम करना तथाआर्थिक शक्ति के केंद्रीकरण को रोकने के लिए निजी एकाधिकारों की स्थापना को नियंत्रित करना।

इस नीति की मुख्य बातें निम्नलिखित थीं –

1. उद्योगों का वर्गीकरण
2. कुटीर तथा लघु उद्योगों को ऊँची प्राथमिकता
3. क्षेत्रीय असमानताओं को कम करना
4. तकनीकी और प्रबंधक संवर्ग तथा औद्योगिकसम्बन्ध

इस प्रकार 1956 ई० की औद्योगिक नीति में सरकारी एकाधिकार के क्षेत्र का विस्तार किया गया, लेकिन निजी और सार्वजनिक क्षेत्र की आपसी निर्भरता बनी रही और इन दोनों के मध्य उद्योगों का वर्गीकरण लोचपूर्ण रखा गया।

9. कृषि और उद्योग सम्बंध :

नेहरू जी गाँधीजी द्वारा प्रतिपादित चरखे से सूत कातने के सिद्धांतको स्वीकार करते थे, इसलिए ग्रामीण क्षेत्रों में कुटीर उद्योगों को बढ़ावा देना चाहते थे। नेहरू ने किसानों की आर्थिक स्थिति को मज़बूत करने के लिए कृषि आधारित उद्योगों पर विशेष ध्यान दिया। इसके अंतर्गत उन्होंने कृषि के साथ-साथ उद्योगों को भी विकसित करने का प्रयास किया जिससे गाँवों में ही लोगों के लिए रोजगार के अवसरों में वृद्धि हो सके और ग्रामीणों को गाँवों से पलायन के लिए मजबूर नहीं होना पड़े। इस नीति के पीछे नेहरू की सोच यह थी की इससे न केवल रोज़गार के अवसर बढ़ेंगे अपितु देश की अर्थव्यवस्था में भी विकास होगा।

10. कृषि उत्पादों की बिक्री के लिए बेहतर बाज़ार व्यवस्था :

प्रत्येक किसान की यह आकांक्षा होती है कि उसे अपने उत्पाद का उचित मूल्य मिले। ऐसे में उसे अच्छे बाज़ार की आवश्यकता होती है जहाँ उसे अपने उत्पादन की बिक्री के लिए बेहतर विकल्प उपलब्ध हों। नेहरूके शासन काल में इस दिशा में निरंतर प्रयास के चलते कृषि बाजारों की बेहतर व्यवस्था को सुनिश्चत किया गया जिससे किसान अपने उत्पादों का उचित मूल्य प्राप्त कर सकें।

11. सहकारी आंदोलन :

नेहरू ने किसानों को आर्थिक रूप से सशक्त बनाने, उनकी सौदेबाजी (Negotiation) की शक्ति में सुधार करने और उन्हें ऋण, निवेश और विपणन सुविधाओं तक पहुँचप्रदान करने के साधन के रूप में कृषि में सहकारी आंदोलन को बढ़ावा दिया। सहकारी आंदोलन का उद्देश्य किसानों को सामूहिक रूप से उत्पादन, विपणन और ऋण संचालन जैसी विभिन्न कृषि गतिविधियों को करने के लिए सहकारी समितियों में संगठित करना था।

इस प्रकार नेहरुजी ने विभिन्न योजनाओं के माध्यम से भारतीयकिसानों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति में सुधार लाने के लिए आवश्यक कदम उठाये जो काफ़ी हद तक सफल सिद्ध हुए। नेहरुजी की कृषि नीति में जिन भी योजनाओं, सुधारों आदि का समावेश किया गया उनका उद्देश्य किसानों की आर्थिक स्थिति में सुधार लाकर उन्हें आर्थिक रूप से स्वावलंबी बनाना था।

भारत में सहकारिता आंदोलन का सबसे सफल प्रयोग दुग्ध उत्पादन में हुआ जो आगे चलकर **"सफ़ेद क्रांति"** में परिवर्तित हो गया। श्वेत क्रांति की शुरुआत गुजरात केकैरा (खेड़ा) ज़िले में हुई। यहाँ के किसानों ने दिसम्बर 1946 ई० कैरा ज़िला सहकारी दुग्धउत्पादन संघ लिमिटेड का गठन किया। इसने अपनी शुरुआत आनंदनामक स्थान से की।

नेहरू की आर्थिक विकास की नीति ने विशेष रूप से ग्रामीण विकास को नया आयाम प्रदान किया। नेहरू की कृषि नीति में ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि और कृषि आधारित औद्योगिक विकास को संतुलित ढंग से समाहित कियागया था जिससे कृषि क्षेत्र की वृद्धि के साथ-साथ ग्रामीण क्षेत्रों में आर्थिक विकास भी सम्भव हो सके।

यदि समग्रता में देखा जाए तो नेहरू की कृषि नीतियों का व्यापक उद्देश्य भारतीय कृषि को आधुनिक बनाना, ग्रामीण क्षेत्रों में गरीबी को कम करना और बढ़ती आबादी के लिए खाद्य सुरक्षा सुनिश्चितकरना था।

संदर्भ-ग्रंथ सूची:

1. Zamindari Abolition and Land Reforms in India – P. C. Joshi (1946) (भारत में जमींदारी प्रथा और भूमि सुधारों की प्रारंभिक अवधारणाएँ)
2. Land Tenures and Land Revenue Policy in India – B. H. Baden-Powell (1894) (भारत में भूमि व्यवस्था और राजस्व नीति पर विस्तृत अध्ययन)
3. नेहरू और भारतीय कृषि- बालकृष्ण गुप्ता
4. नेहरू युग की कृषि नीतियाँ- डॉ. सुरेश चंद्र शर्मा
5. जवाहरलाल नेहरू: एक जीवनी- एस. गोपाल
6. नेहरूज़ विज़न ऑफ़ इंडिया- आनंद कुमार
7. द एग्रेरियन क्वेश्चन इन नेहरूज़ इंडिया- डी. एन. धनगारे
8. एस.के. पाण्डे, आधुनिक भारत, प्रयाग एकेडमी पब्लिकेशन एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, संस्करण-2014
9. रंजन, राकेश एवं कुमार मुकेश, गांधी, नेहरू और टैगोर, उपकार प्रकाशन, आगरा-2

International Research Journal of Humanities and Interdisciplinary Studies
IRJHIS